चोट

म.क.रैना, मुम्बई

(मूल कश्मीरी 'व्वटुखूर' : हिंदी अनुवाद - लेखक)

यह गाँव पहाडी के दामन में बसा था। हर तरफ़ जंगल ही जंगल थे। गाँव के बीचों बीच एक छोटी नदी बह रही थी। नदी के किनारे सलीमा का घर था और उस के सामने रहते थे जमाल साहब। जमाल साहब सोपोर के सरकारी दफ्तर में हैड कलर्क थे। सिर पर कराकुली टोपी पहनते थे। तनख्वाह अच्छी खासी थी। ऊपर की कमायी भी बहुत अच्छी थी। यही वजह थी कि उनकी पत्नी शफ़ीका दिन में दो बार फेरन बदलती और नया फेरन पहन कर तुरंत सलीमा के घर पहुँच जाती। वह इसलिये कि यदि सलीमा उसका नया फेरन न देखती तो पहनने का मतलब ही क्या ?

शफ़ीका पढ़ी लिखी नहीं थी फिर भी उसने अंग्रेज़ी के कई शब्द याद कर लिये थे। स्वयं को सलीमा के बराबर बताने के लिये वह हर बार अंग्रेज़ी के दो चार शब्द ज़रूर बोलती थी। सलीमा एक नेक औरत थी। दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ती थी। उसका पति अली मुहम्मद दुकानदारी करता था और लड़का क़ादिर आठ जमातें पढ़ कर अपने पिता का हाथ बटाता था। सलीमा के एक लडकी थी जिसका नाम था बंटी। वह सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। जमाल साहब का बेटा तारिक मैट्रिक में पढ़ता था। उसकी क़ादिर के साथ अच्छी दोस्ती थी। तारिक हर दिन अपने घर से किस्म किस्म के सेब लाता था और क़ादिर को खिलाता था। तारिक के अपने कोई सेब के बाग नहीं थे। यह सेब उसके पिता की आसामियाँ उन के लिये लाते थे। हैड कलर्क जो थे! जमाल साहब के एक और बेटा था। उसका नाम था सुहैल। वह आठवीं कक्षा में पढ़ता था।

जमाल साहब के घर के पास ही दुलारी रहती थी। वह एक मिडल स्कूल में नौकरी करती थी। उसके पति की आठ साल पहले मृत्यु हो गई थी। दुलारी के एक बेटा था, नाम था रमेश। वह तारिक के साथ ही पढ़ता था। दुलारी के पति टीचर थे। उनके गुज़रने के बाद उनकी जगह दुलारी को मिल गई थी।

औरतों में दुलारी और सलीमा की आपस में बहुत बनती थी। दोनों एक साथ उठती बैठती और आपस में घुल-मिल कर रहती थीं। एक दूसरे के बच्चों को भी बहुत प्यार करती थीं। दोनों को शफ़ीका के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी पर उसका बार बार अपना बडप्पन दिखाना उन को पसंद नहीं था। 'अरे कोई बड़ा होगा तो अपने घर में! हमसे क्या लेना देना?' पर दोनों जमाल साहब का बहुत आदर करती थीं और उनके बच्चों को अपने बच्चों के समान ही समझती थीं।

उस दिन सरकारी छुट्टी थी। जमाल साहब के घर से ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें आ रही थीं। लगता था उनके घर में कोई आया है। दुलारी ने बाहर निकल कर अपने आँगन से देखने की कोशिश की, पर कुछ दिखाई न दिया। ''सब कुछ शुभ है ना?'' पर बीच बीच में हँसी की आवाज़ सुन कर लगता था कि शुभ ही होगा। अंदर की बात जानने के लिये दुलारी ने सलीमा से पूछा पर उसे भी कुछ मालूम न था। तभी जमाल साहब के घर से दो आदमी बाहर निकले। सलीमा और दुलारी इधर उधर छिप गयीं। ''क्या पता, कोई बड़ा दिन होगा, या फिर जमाल साहब की तरक्की हो गई होगी! बहुत समय से शफीका कह रही थी कि जमाल साहब की तरक्क़ी कब की हो चुकी होती पर उस का अफ़सर उसकी राह में रोड़े अटका रहा है। अफसर एक हज़ार रुपये की रिश्वत माँग रहा है। पर शफ़ीका के कहने के मुताबिक जब जमाल साहब ने स्वयं जीवन भर रिश्वत नहीं ली तो अफ़सर को कहाँ से देंगे? अब जो हो सो हो, पर शफीका ने तो हमें इस बारे में कुछ बताया ही नहीं कि माजरा क्या है? सोचा होगा, यह लोग ईर्ष्या से जल जायेंगे यदि कुछ बताया तो'', सलीमा ने दुलारी से कहा।

बात ज़्यादा देर तक छिपी न रही। दोपहर के खाने के तुरंत बाद शफ़ीका नया कुराबदार फेरन पहन कर सलीमा के पास पहुँची और कहा, ''ख़ुदा नजात दे। इन्होंने क्या किया! किसी सूरत भी माने नहीं।'' 'ख़ुदा नजात दे' शफ़ीका का तकिया कलाम था। पर असल में कौन थे और क्या बात हुई, यह सलीमा की समझ में न आया। उसने पूछा, ''किन्होंने?'' शफीका ने विस्तार पूर्वक कहा, ''शहर से मेरा भाई आया था ना! उसके साले के लड़के जीलानी साहब की नौकरी यहीं पर लगी है। वह लोग शहर से हमारे लिये क्या क्या लेकर आये। तारिक साहब के लिये सूट लाये हैं। मेरे लिये यह फेरन और कान की बालियाँ लाये हैं।'' यह कहकर शफ़ीका ने अपने फेरन और कान की बालियों की तरफ इशारा किया। सलीमा ने दोनों चीज़ों की तारीफ़ की, पर सोच में पड़ गई। कान की यह बालियाँ शफ़ीका ने उसे गये साल भी यह कहकर दिखाई थीं कि यह उसके पिता ने उसके लिये अरब से लाये हैं। सलीमा ने बात आगे बढ़ाई, ''वह लोग गये क्या?'' शफ़ीका ने जवाब दिया, ''खुदा नजात दे। मेरे भाई को फुर्सत कहाँ है? वह एक मिनट के लिये भी सचिवालय से हिल नहीं सकते। एक दिन के लिये भी कहीं जाते हैं तो तूफ़ान खड़ा हो जाता है। मिनिस्टर उनके सिवा कुछ करने को राज़ी ही नहीं होता है ना!'' सलीमा ने पूछा, ''जीलानी साहब कहाँ रहेंगे?'' जवाब मिला, ''खुदा नजात दे। मैं उसे कहीं और रहने दूंगी क्या? मैंने कहा, मैं उसे अपने पास रखूंगी। वह मेरे लिये तारिक़ साहब जैसा ही है। अभी उस की उम्र ही क्या है? मुश्किल से बीस साल का होगा। पर खुदा नजात दे, अभी से अफ़सर लोगों का दुलारा है।'' थोडी देर रुक कर शफ़ीका ने बात जारी रखी, ''देखो, मैंने तुमसे पूछा ही नहीं। क़ादिर कहाँ है? मैंने बहुत समय से उसे देखा ही नहीं। दुकान पर जाता है क्या?'' सलीमा के तन बदन में आग लग गई। शफीका हमेशा अपने बच्चों को तारिक साहब और सुहैल साहब कहकर पुकारती थी पर क़ादिर और रमेश को वह हमेशा क़ादिर और रमेश कहकर ही बुलाती थी। उसे उन दोनों के लिये साहब कहना अच्छा नहीं लगता था। यह कोई नई बात नहीं थी पर जब आज उसने जीलानी को भी जीलानी साहब कहकर पुकारा तो सलीमा से न रहा गया। उसने कहा, ''हाँ हाँ, दुकान पर ही जाता है। दुकान पर नहीं जायेगा तो और क्या करेगा? उसका पिता हैड कलर्क नहीं है ना!'' शफ़ीका की समझ में नहीं आया कि सलीमा किस बात पर झल्लाई। उसने सलीमा से कहा, ''तुम क्यों जल रही हो? वास्तव में तुम्हें ईर्ष्या हो रही है कि हमारे पास जो है, वह क्यों है?'' फेरन को झटकते हुये शफ़ीका वहाँ से निकल गई और सलीमा उसे एकटक देखती रही।

जीलानी शहर का लडका था। उसके पिता तवाज़ा महकमे में नौकरी करते थे जहाँ उसे बड़े बड़े अफ़सरों की सेवा करने का अवसर मिलता था। वहीं पर किसी अफ़सर ने उसके बेटे को नौकरी दिलाने

के लिये किसी मंत्री से सिफ़ारिश की थी। जीलानी दिमाग का तेज़ नहीं था पर शहरवासी होने के कारण वह गाँव के लड़कों को नीची नज़र से देखता था। क़ादिर व रमेश को वह कुछ ज़्यादा ही सताता था। उन्होंने कभी शहर नहीं देखा था ना! जीलानी की बातें सुन कर उन्हें शहर देखने का शौक भी नहीं रहा। सोपोर एक छोटा कस्बा था जो उन के गाँव से केवल आठ मील ही दूर था। वहाँ भी वह महीने दो महीने में एक बार ही जा पाते थे और वह भी तब जब परिवार का कोई वरिष्ठ सदस्य साथ हो। सोपोर में एक सिनेमा घर था जहाँ सारा दिन लाउड स्पीकर पर फिल्मी गाने बजा करते थे। जब गाँव के बच्चों ने जीलानी को यह जानकारी दी तो वह हँस पड़ा। उसने कहा, ''अरे मूर्खो! शहर में पच्चास सिनेमा घर हैं। हर सिनेमा घर पर दो दो मील तक लाइन लगती है टिकट लेने के लिये। वहाँ टिकट निकालना सूई के छेद से हाथी को निकालने के समान है। यहाँ की तरह नहीं कि लोगों को गाना सुना सुना कर बुलाया जाये।'' क़ादिर ने पूछा, ''तो तुम किस तरह टिकट निकालते हो?'' जीलानी ज़ोर से हँस पड़ा। उसने कहा, ''हम थोडे ही टिकट लेने के लिये जाते हैं। हमारा टिकट हमारे घर पर ही आता है।''

जीलानी शहतूत के वृक्षों के ऊपर था। हाँ, गाँव के लडकों को वह कुछ ऐसा ही कहता था। एक दिन बंटी ने पूछा, ''तुम वृक्षों के ऊपर कैसे बैठते हो?'' जीलानी के बदले क़ादिर ने जवाब दिया, ''मूर्ख हो क्या! ऊपर होने का मतलब है मालिक होना। जैसे अबुल राखी जंगलों का मालिक है।''

जीलानी की नौकरी चलती रही। नौकरी क्या थी? दोपहर को खाना खाकर वह बाज़ार की तरफ चल देता। जहाँ कहीं दुकान की चौखट पर जगह मिलती, बैठ जाता और लोगों को शहर की सच्ची झूठी कहानियाँ सुनाता। कहीं कोई आदमी शहतूत के पत्ते काटता या शहतूत का वृक्ष काटते हुये मिलता, उससे ज़ोर ज़बरदस्ती करके पैसा वसूल करता। जो पैसे नहीं देता, उसके ऊपर केस चलाने की धमकी देता। पहले पहले वृक्षों के साथ छेड छाड करने वालों को पकडने के लिये गश्त भी लगाया करता था पर समय चलते वह सब छोड दिया। अब तो लोग सीधे उसके घर पर ही आ जाते और हिसाब किताब करके चले जाते। हाँ, हर दिन शाम को गाँव के बच्चों के साथ बैठना और उन्हें शहर का सच झूट सुनाना वह कभी नहीं भूलता। वह कहता, ''शहर में हर एक के पास मोटर है। जिस के पास मोटर नहीं वह तांगे पर चढ़ता है। पर तांगे पर चढ़ने वालों को लोग हक़ारत की नज़र से देखते हैं। शहर में दस दस मँज़िला मकान होते हैं। बहुत सारे मकानों में मोटर तीसरी मँज़िल तक जाते है। शहर के दो कालेजों में विलायत से आये लडके भी पढ़ते हैं। शहर में बारह अस्पताल हैं। सब से बडे अस्पताल में पाँच सौ कमरे हैं। एक एक कमरे में दो दो सौ बीमारों के रहने की जगह है।'' क़ादिर ने पूछा, ''अब की बार तुम शहर जाओगे तो हमें भी घुमाने के लिये ले जाना।'' जीलानी ने जवाब दिया, ''तुम्हें शहर में थोडे ही चलना आयेगा। देखते देखते गाडी के नीचे आ जाओगे।''

जीलानी एक बार अपने पिता के साथ पठानकोट गया था। वहीं उसने रेलगाड़ी देखी थी। रेलगाड़ी में सफ़र तो नहीं किया पर उस के डिब्बों को अंदर से और बाहर से भरपूर देख लिया था। पहली बार रेलगाड़ी के डिब्बे के अंदर जाकर उसकी चीख निकल गई थी, ''मेरे खुदा! रेलगाड़ी के अंदर ही बाथ रूम और संडास!'' पर आज ऐसी बात नहीं थी। उसने रेलगाड़ी और उसके सफ़र के बारे में जो जो किस्से कहानियाँ सुनी थीं, वह सब कुछ वह गाँव के बच्चों को इस अंदाज़ में सुनाता जैसे उसके सामने हुआ हो। रमेश ने पूछा, ''तुम कितनी बार रेलगाड़ी में सफ़र कर चुके हो।'' जीलानी ने जवाब दिया, ''अनेक बार। मेरा हर दूसरा दिन रेलगाड़ी में ही गुज़रता था।'' यह बात किसी हद तक ठीक भी थी। जब तक वह अपने पिता के साथ पठानकोट में रहा, वह तक़रीबन हर दिन रेलगाड़ी के अंदर घुस कर खिडकी

पर बैठ जाता और दूसरी तरफ से चलने वाली रेलगाड़ियों को देखता। जीलानी के बिना टिकट स्टेशन के अंदर जाने की वजह से उसके पिता को कई बार जुर्माना भी भरना पड़ा था।

जीलानी बच्चों को एक के बाद एक कहानी सुनाता। ''एक दिन गाँव का एक आदमी सूट बूट पहन कर रेलगाडी में बैठा था। मेरे सामने ही उसकी सीट थी। खिडकी के बाहर से उसे किसी ठग ने आवाज़ दी। ज्योंही उसने खिड़की से बाहर देखा, पीछे से एक और ठग ने उसकी जेब से बटुआ उड़ा लिया। गाँव वाला बहुत रोया पर क्या कर सकता था।'' तारिक़ ने पूछा, ''तुम्हें कैसे पता चला कि वह गाँव का रहने वाला था।'' जीलानी को तारिक़ का सवाल करना अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, ''तो शहर का था क्या? अरे, शहर वाला होता तो वहीं उसका सर फोड़ देता। शहर वाले की आठों इंद्रियाँ सतर्क रहती हैं।'' क़ादिर सोच में पड़ गया कि शहर वाले की आठ इंद्रियाँ कहाँ कहाँ होती हैं। पर पूछने की हिम्मत न हुई।

जीलानी कहता गया, ''एक बार और मेरे साथ एक लड़का सफ़र कर रहा था। वह बाहर कहीं डाक्टरी की ट्रेनिंग ले रहा था। उसने फीस के पाँच सौ रुपये अपने तकिये के खोल में छिपा कर रखे थे। सुबह जब वह नींद से जागा, देखा तकिया मौजूद है पर पैसे गायब हैं।'' कादिर ने पूछा, ''वह लडका शहर का था या गाँव का?'' जीलानी के कुछ कहने से पहले ही रमेश बोल उठा, ''डाक्टरी पढ़ रहा था तो शहर का ही रहा होगा ना!'' जीलानी चुप रहा। उसके गले से आवाज़ ही नहीं निकली। उसको चुप देख लडकों ने कहा, ''एक और कहानी सुनाओ।'' जीलानी ने उंगलियों से रगड कर दोनों आँखें साफ की। पानी पिया और गला साफ करके बोला, ''अच्छा सुनो। पर कोई सवाल नहीं करेगा।'' लड़कों ने उसकी बात मान ली। जीलानी ने बोलना शुरू किया, ''एक बार एक पंजाबी मेरे साथ सफर कर रहा था। वह जूते उतारे बिना ही सो गया। पूछने पर उसने बताया, ''जूते कीमती हैं। कोई उठाकर न ले जाये, इसलिये पहन कर ही सोता हूँ।'' सुबह जब उसकी आँख खुली तो क्या देखा कि जूते तो पाँव में ही हैं, पर उसके तलवे किसी ने काट लिये हैं। पंजाबी छाती पीटने लगा। बाद में पता चला कि उसने जूतों के अंदर सोना छिपा कर रखा था।'' कहानी सुन कर लड़के सकते में आ गये। सुहैल ने जीलानी से पूछा, ''तुम्हें रेलगाड़ी में ड़र नहीं लगता था?'' जीलानी ने कहा, ''हम सात समंदर का पानी पी कर आये हैं। हमें कैसा डर?''

छः महीने बीत गये। एक दिन जमाल साहब के भतीजे अश्फाक़ साहब उनके घर पर आये। वह असल में दिल्ली में रहते थे और घूमने के लिये कश्मीर आये हुये थे। अश्फाक़ साहब की दिल्ली में कश्मीरी शालों की दुकान थी। जमाल साहब और शफ़ीका से जीलानी की तारीफ़ें सुन कर वह बहुत खुश हुए और उसने जीलानी को अपने पास दिल्ली ले जाने की इच्छा जताई। जब अश्फाक़ साहब ने जीलानी के माता पिता से इस बारे में बात की तो वह राज़ी हो गये। फ़ैसला हुआ कि रमज़ान का महीना निकलते ही वह जीलानी को तार भेज कर अपने पास बुला लेंगे।

दिल्ली जाने की बात सुन कर जीलानी की नींद उड गई। उसे एक एक दिन एक एक महीने के बराबर लगने लगा। ''खुदा नजात दे। अब वह बेक़रार है जाने के लिये! नहीं तो यहाँ की नौकरी भी बहुत अच्छी थी। फिर यह तो बहुत मेहनत करने वाला लड़का है, ऐसा वैसा नहीं है ना?'' शफ़ीका दुलारी को सुना रही थी। जब से सलीमा के साथ शफ़ीका की तू तू मैं मैं हुई थी, तब से वह ज़्यादातर दुलारी के पास ही आती थी। पर दुलारी के सामने उस की ज़्यादा नहीं चलती थी। वह अध्यापिका थी ना, शफ़ीका के गलत अंग्रेज़ी शब्दों को तुरंत पकड़ लेती थी।

आख़िर वह दिन आ ही गया। जीलानी को दिल्ली आने का तार मिल गया। वह खुशी से फूले न समाया। ''तीन दिन बाद ही निकलना है तो कल ही शहर जाना होगा।'' गाँव के बच्चे इसके जाने से बहुत

दुखी थे। यद्यपि जीलानी उन्हें हर दिन फटकारता और ताने देता था, फिर भी वह उससे बहुत प्यार करते थे। अगले दिन जब जीलानी शहर जाने के लिये ताँगे पर सवार हुआ तो बच्चे फूट फूट कर रोने लगे। जीलानी पर इस का कोई असर न हुआ। वह खयालों में दिल्ली पहुँच चुका था। शफ़ीका ने उससे कहा, ''मेरे बच्चे, सफ़र में सावधान रहना। खुदा नजात दे इन लुटेरों से। वह तो कहीं भी आकर लूट लेते हैं।'' जीलानी ने ताँगेवाले को चलने का इशारा किया और शफ़ीका से बोला, ''हमारा क्या बिगाड लेंगे? हम तो शहर वाले हैं।''

तीसरे दिन जीलानी बस से पठानकोट पहुँचा। टिकट लिया और रेलगाड़ी में बैठ गया। उस की सीट खिड़की के पास थी पर वहाँ एक नवयुवक बैठा हुआ था। जीलानी को देखते ही वह उठ खडा हुआ और दूसरी जगह जाकर बैठ गया। जीलानी ने अपना ट्रंक और बैग ऊपर की बर्थ पर रखा और सीट पर बैठ गया। एक थैली थी जो उसने अपने हाथ में रखी। दूसरी तरफ एक दाढ़ी वाला बैठा था जो जीलानी के ट्रंक को तक रहा था। यद्यपि उसने जीलानी से कोई बात नहीं की पर जीलानी ने उसको देखकर ही पहचान लिया। उसके मुताबिक़ दाढ़ी वाला चोर था और उससे सम्भल कर रहने की ज़रूरत थी। जीलानी उसके बारे में सोच ही रहा था कि दाढ़ी वाले ने पूछा, ''कहिये! कहाँ तक जाना है?'' जीलानी ने मन में पैदा हुये डर को दबाने की कोशिश की। यह सोच कर कि दाढ़ी वाले को पता न चले कि वह पहली बार दिल्ली जा रहा है, उसने कहा, ''वैसे तो हम मद्रास जा रहे हैं पर पहले दिल्ली जायेंगे। हम हर महीने दो महीने यहाँ चक्कर लगाते हैं।'' दाढ़ी वाले ने सिर हिलाया। जीलानी ने गौर से देखा, उसकी आँखें चमक रही थीं। जीलानी ने मन ही मन में उससे कहा, ''हमें चालाकी मत दिखाना, हम तुम्हें पहले ही पहचान गये हैं।'' उधर नवयुवक अख़बार पढ़ रहा था। जीलानी ने सोचा, ''वह नवयुवक बहुत शरीफ़ होना चाहिये। कहीं कोई उसे लूट न ले!'' जीलानी ने उसके कान में कहा, ''मेरे भाई, खबरदार रहना। वह दाढ़ी वाला है ना, वह चोर है। मैं उसे बहुत समय से जानता हूं।'' नवयुवक ने कहा, ''हमारा क्या बिगाड़ेगा। हम एक दूसरे के साथ रहेंगे।'' जीलानी खुश हुआ। सोचा, चलो एक अच्छा साथी तो मिल गया।

रेलगाड़ी चलने लगी। कुछ देर बाद ही शोर सुनाई दिया। दरवाज़े के पास चार पाँच आदमी ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहे थे। ऐसा लगता था, किसी का सामान चोरी हुआ है। तभी एक कोट वाला सामने आया और जीलानी के पास बैठ गया। वह रो रहा था। जीलानी ने पूछा, ''क्या हुआ? आप रो क्यों रहे हैं?'' कोट वाले ने कहा, ''क्या बताऊं? मैं हाथ धोने के लिये उधर वाश बेसिन के पास गया था, पीछे से किसी ने मेरी अटैची उडा ली। सब कुछ उसी में था। जेब में एक पैसा नहीं है। दिल्ली तक जाना है, क्या करूं?'' जीलानी ने देखा, दाढ़ी वाला अपनी सीट पर ही बैठा था पर चेहरे से खुश लग रहा था। ''उसी के किसी साथी ने इस बेचारे की अटैची उड़ायी होगी। देखो, अब भी किस तरह मेरी अटैची को तक रहा है?'' जीलानी मन ही मन बोला। उसे कोट वाले पर तरस आ रहा था। उसने कहा, ''आप दुखी मत हों। हम आपके साथ हैं।'' जीलानी ने नवयुवक की तरफ देखा। उसने अपना सिर हिलाया मानो वह भी जीलानी के साथ हो। जीलानी ने एक चाय वाले को आवाज़ दी और अपने लिये, कोट वाले के लिये और नवयुवक के लिये चाय मंगवाई। दाढ़ी वाला जीलानी की तरफ देख रहा था। ''तुम्हें गोली दूँगा,'' जीलानी ने उसे मन ही में कहा।

कोट वाला खुश था। वह अपना दुख दर्द भूल गया। चाय व खाने के अलावा जीलानी ने उसे बीस रुपये भी दिये। एक स्टेशन पर रेलगाड़ी रुक गई। जीलानी ने कोट वाले से कहा, ''सुनो, उस दाढ़ी वाले से सावधान रहना। मैं पानी लेकर आता हूँ। वैसे चिन्ता की कोई बात नहीं। वह आदमी भी अपना ही भाई

है।'' जीलानी ने नवयुवक की तरफ इशारा किया और रेलगाड़ी से नीचे उतर गया। हाथ में रखी थैली भी साथ ले ली।

पानी लेकर जीलानी वापस आया। देखा, दाढ़ी वाला सीट पर ही बैठा था। मन को शाँति मिली। पानी कोट वाले की तरफ़ बढ़ा दिया। रेलगाड़ी निकल पड़ी। नवयुवक अपनी सीट पर नहीं था। जब वह बड़ी देर तक वापस नहीं आया तो जीलानी को चिन्ता होने लगी। उसने कोट वाले से पूछा, ''यह आदमी पिछले स्टेशन पर ही तो नहीं रह गया?'' कोट वाले ने कहा, ''नहीं तो! उसे खिड़की के बाहर से किसी ने बुलाया और वह उतर गया। अपना सामान भी लेकर गया।'' जीलानी ने ऊपर देखा, उसका बैग गायब था। युवक उसी का बैग लेकर गया था। ''पर वह तो मेरा बैग था,'' जीलानी चीख पडा। कोट वाले ने जवाब दिया, ''आप ने हमें कहाँ बताया था? आपने तो कहा था कि वह भाई है।'' जीलानी अपना सिर पीटने लगा।

सोने के लिये जीलानी की ऊपरी बर्थ थी। पर नींद कहाँ थी। बैग नवयुवक ले गया था। बैग के अंदर बादाम व पेपरमैशी का सामान था जो उसके पिता ने इश्फाक़ साहब के लिये दिया था। जीलानी का वह कीमती शाल भी बैग के अंदर ही था जो वह रात को ओढ़ने के लिये साथ लाया था। रात आ गई। ठंड बहुत थी और जीलानी के पास ओढ़ने के लिये कुछ भी न था। आखिर जब नींद आने लगी तो हाथ में रखी थैली तकिये की जगह सिर के नीचे रख दी। थैली की रस्सी को गले में बांध दिया ताकि कोई चुरा कर न ले जाये। सुबह सवेरे शोर सुन कर उस की नींद खुल गई। कोई स्टेशन आ गया था। चाय वाले चीख चीख कर लोगों को चाय बेच रहे थे। जीलानी ने थैली को हाथ से टटोला। थैली मौजूद थी। चाय के पैसे देने के लिये ज्योंही उसने थैली के अंदर हाथ डाला तो उसकी जान निकल गई। थैली में एक बडा छेद था और बटुआ गायब था। जीलानी ने छाती पीट ली, ''मेरे खुदा! मैं लुट गया, बरबाद हो गया।'' वह ज़ार ज़ार रोने लगा। लोग जमा हो गये। कोट वाले ने कहा, ''चलो पुलिस में रपट लिखाओ। मैं भी साथ चलता हूँ।'' जीलानी ने रोते रोते पूछा, ''ट्रंक की रखवाली कौन करेगा?'' दाढ़ी वाले ने कहा, ''मैं करूँगा।'' जीलानी सहम गया। सोचा, ''क्या चोर को ही रखवाली करने दूँ। उसी ने मेरा बटुआ भी उड़ाया होगा। नहीं, नहीं।'' जीलानी ने कोट वाले से विनती की, ''मेरे भाई, आप यहीं रुक जाओ। पर ध्यान रखना, ट्रंक से नज़र मत हटाना।'' यह कहकर जीलानी पुलिस में रपट लिखाने गया। दाढ़ी वाला भी ज़रदस्ती साथ हो लिया। जीलानी ने सोचा, ''आने दो। मेरे पास अब क्या है जो ले जायेगा। पता नहीं, मेरा बटुआ कहाँ रखा होगा?''

रपट लिखाने में पाँच दस मिनट लगे। हवालदार ने पूछा, ''किसी पर शक़ है क्या?'' जीलानी ने दाढ़ी वाले की तरफ़ देखा पर कुछ कहा नहीं। हवालदार की तरफ़ देखकर इनकार में सिर हिलाया। सोचा, ''यदि दाढ़ी वाले का नाम बता दूँ तो कहीं वह मुझे मार ही न डाले।'' तभी रेलगाड़ी के इँजन की चीख सुनाई दी। वह दोनों दौड़ते दौड़ते गाड़ी में चढ़ गये। दाढ़ी वाले ने जीलानी के हाथ को ज़ोर से पकड़ कर रखा था। ज्योंही जीलानी को इस का भास हुआ, उसने हाथ छुडा लिया। सोचा, चोर को हाथ लगाना भी पाप है। गाड़ी के अंदर से एक लड़का दौड़ता हुआ आया और चलती गाड़ी से कूद पड़ा। उसे देख जीलानी की आँखें फटी की फटी रह गयीं। लड़के के हाथ में जीलानी का बटुआ था।

सीट पर पहुँचे तो अजीब तमाशा देखा। कोट वाला गायब था और उसके साथ ही दो आदमियों का सामान भी गायब था। वह दोनों चाय पीने गये थे और अपना सामान कोट वाले के हवाले करके गये थे। जीलानी ने ऊपर अपनी बर्थ की ओर देखा। उसका ट्रंक भी गायब था। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। एक वयोवृद्ध आदमी ने उसका हाथ पकड़ा। जीलानी ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसे

वह भी एक चोर ही दिखाई दिया। ''किस पर भरोसा करूँ? कहीं लोग मेरी कमीज़ भी न उतार दें!'' जीलानी गश खाकर गिर पड़ा।

रेलगाड़ी दिल्ली पहुँच गई। जीलानी गाड़ी से नीचे उतरा। टाँगें जवाब दे चुकी थीं। इश्फाक़ साहब का पता उसके बैग के साथ ही गुम हो गया था। बस इतना याद था कि चाँदनी चौक जाना है। ''वहाँ तक कैसे पहुँचूं?'' स्टेशन के बाहर निकला और एक रिक्शा वाले से पूछा, ''चाँदनी चौक जाने का कितना किराया है?'' जवाब मिला, ''पाँच रुपये।'' ''वह कहाँ से लाऊँगा?'' जीलानी सोच में पड़ गया। इधर उधर देखा, कोई पहचान का आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। आँखों में आँसू आ गये। सारी हेकड़ी निकल गई। ''गाँव के बच्चों को क्या क्या सुनाता था? क़ादिर को हक़ारत से 'कादा' और रमेश को 'रमा' कहता था। कभी किसी को अपने बराबर का नहीं समझा। इतना कहने के बावजूद उन्होंने मेरे जाने पर आँसू बहाये। वह मुझ से कितना प्यार करते थे और मैं उन्हें हमेशा गँवार कहकर चिढ़ाता था। अब देख लो, मुझे खुदा ने कहाँ लाकर पटक दिया।''

जीलानी फुट पाथ पर बैठ गया। एक कदम भी आगे चलने की हिम्मत नहीं थी। अपने सिर को घुटनों के बीच छिपा कर रो पड़ा। किसी ने पीछे से आकर उसके सिर पर हाथ फेरा और हाथ में कुछ थमा दिया। जीलानी ने सिर उठाया। देखा, हाथ में पच्चास रुपये का नोट था। पीछे की ओर मुड कर देखा, वही दाढ़ी वाला तेज़ तेज़ कदम उठाते हुये जा रहा था। जीलानी उसके पीछे दौडा पर जब तक उसके पास पहुँचता, वह रिक्शा में बैठ कर निकल गया। जीलानी की आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी। ''मेरे भाई, मुझे माफ़ कर देना। मैं आप को ही चोर समझ रहा था। मैं आपका एहसान कैसे चुका पाऊँगा?'' पर जीलानी की बात सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था।

जीलानी एक रिक्शा में बैठ गया और चाँदनी चौक पहुँचा। वहाँ से किधर जाना है, यह उसको मालूम न था। उसने रिक्शा वाले से पूछा, ''भाई, तुम अश्फाक़ साहब को जानते हो? वह कश्मीरी शाल बेचते हैं और उनके पास मोटर भी है।'' रिक्शा वाले ने कहा, ''अरे भाई, तुम पागल तो नहीं हो? यहाँ लाखों लोगों के पास मोटर है। यह कोई छोटा शहर थोड़े ही है? यह दिल्ली है दिल्ली। यहाँ एक दिन में हज़ारों लोग गुम हो जाते हैं और सैंकड़ों गाड़ियों के नीचे आकर मर जाते हैं।'' जीलानी बुत बना उसे देखता रहा। सोचा, ''मैं भी गाँव के बच्चों को इसी तरह धुतकारता था।''

एक कश्मीरी दुकानदार से पूछ कर जीलानी ने अश्फाक़ साहब का पता लगा लिया और देर रात उनके घर पहुँच गया। वह लोग भी उसके लिये परेशान हो रहे थे। जीलानी की कहानी सुन कर वह भी सकते में आ गये। ''चलो, खुदा का शुक्र है कि तुम सही सलामत यहाँ पहुँच गये। सामान का ग़म मत करो, सब नया मिल जायेगा,'' अश्फाक साहब की माँ ने कहा।

❄❄❄

शफीका ने पीले चावल बनाये और सभी छोटों बड़ों को खिलाया। ''जीलानी साहब की वजह से अश्फाक साहब की बहुत मदद हुई है। कारोबार भी बढ़ गया है। अब उन्होंने एक और दुकान खरीदी है और वह जीलानी साहब को ही सौंप दी है। खुदा नजात दे। मैंने सुना है पूरा दिन एक ही टाँग पर खडा रहता है। साँस लेने की फुर्सत नहीं है। अश्फाक साहब के सारे खरीदार उसी के पास आते हैं'', शफीक़ा लोगों को सुना रही थी। कादिर ने पूछा, ''वह यहाँ कब आयेगा?'' शफीक़ा ने जवाब दिया, ''खुदा नजात दे। उसके यहाँ आने की बात अब खत्म हो गई। उसके पास काम छोड़कर जाने का समय कहाँ है?'' यह सुनकर बच्चे दुखी हो गये।

❄❄❄

अश्फाक साहब के पास बड़ा मकान था। कारोबार भी अच्छा खासा था। पर जीलानी को कुछ भी पसंद न आया। पहले दिन से ही वह दुखी था। उसका मन न काम में लगता था और न घर में। खाने को भी कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। कहता था, खाने को मन नहीं है। कई बार अश्फाक़ साहब ने कहा कि थोडा घूम फिर लो पर उसने नहीं माना। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि बात क्या है ? ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसके ऊपर जादू टोना कर दिया हो। एक दिन अश्फाक़ साहब के पिताजी उसे ज़बरदस्ती कुतुब मिनार दिखाने ले गये। वह वहीं एक पत्थर पर बैठ गया, ऊपर चढ़ा ही नहीं। मोटर में चढ़ना भी उसे अच्छा नहीं लगता था। दो महीने इसी तरह बीत गये। पर अब एक और परेशानी हो गई। आठ दिन से जीलानी बुखार से तप रहा था। दवाई बहुत ली पर कोई असर नहीं हुआ। देखते देखते उसकी हालत बिगडने लगी। डाक्टर भी परेशान थे कि बात क्या है, बीमार ठीक क्यों नहीं हो रहा है ? अश्फाक़ साहब ने सोचा, हालात ठीक नहीं हैं। जीलानी के घर वालों को बताना चाहिये। उसने जीलानी के बाप को खबर की। वह परेशान हाल तुरन्त चला आया। बेटे की हालत देख कर वह धक से रह गया। रोते रोते उसने बेटे से उसका हाल पूछा। अपने पिता की आवाज़ सुन कर जीलानी रो पडा। ‘‘तुम्हें क्या तक़लीफ़ है मेरे बच्चे, बताते क्यों नहीं ?’’ पिता ने बेटे के माथे पर हाथ फेरकर पूछा। जीलानी ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं। पिता की गोद में सिर रखा और कहा, ‘‘अब्बा, मुझे गाँव कब वापस ले जाओगे ?’’

❄❄❄